ISSN: 0973-0583

चीन-भारत-पाकिस्तान त्रिकोण : 21वीं सदी का परिदृश्य

डॉ० अनामिका

सहायक प्राध्यापक, एस० बी० कॉलेज, आरा

वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा (भोजपुर)

सारांश

इक्कीसवीं सदी में वैश्विक मामलों में कई भू-रणनीतिक गठबंधनों का उदय हुआ है, जिसने ध्यान को पश्चिम से पूर्व की ओर स्थानांतरित कर दिया है। इस संदर्भ में, चीन, भारत और पाकिस्तान के बीच के संबंध एक रणनीतिक त्रिकोणीय विशेषता के रूप में देखे जा सकते हैं। इस लेख में यह उल्लेख किया गया है कि चीन, भारत और पाकिस्तान के बीच के संबंध उन परिस्थितियों से प्रभावित हैं जो एक रणनीतिक त्रिकोण का निर्माण करती हैं। इस निबंध में, यह तर्क प्रस्तुत किया गया है कि भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच के संबंध एक रणनीतिक त्रिकोण का निर्माण करते हैं।

कुंजी शब्दः-भू-राजनीति, चीन-पाकिस्तान संबंध, चीन-भारत संबंध, सामरिक त्रिकोण

परिचय :

चीन, भारत और पाकिस्तान के बीच के संबंध और समीकरण एशियाई सुरक्षा के महत्वपूर्ण तत्वों में से एक हैं। ये तीनों देश एक रणनीतिक त्रिकोण का निर्माण करते हैं, जिसमें जटिल रिश्ते हैं जो चीन को पाकिस्तान के मुकाबले भारत के प्रति कमजोर बनाते हैं। चीन और पाकिस्तान के बीच का रणनीतिक गठबंधन आधी सदी से अधिक पुराना है और यह समय के साथ मजबूत होता जा रहा है, जो कि परमाणु मिसाइल और पारंपरिक सैन्य सहयोग जैसे कई विकास से स्पष्ट है। इसके अलावा, चीन की प्रमुख रणनीतिक परियोजनाएँ पाकिस्तान में और विवादित कश्मीर के पाकिस्तानी हिस्से में पीपुल्स लिबरेशन आर्मी की कथित उपस्थिति भी इस गठबंधन को और मजबूती प्रदान करती हैं। इन तीनों देशों के द्विपक्षीय समीकरण और प्रत्येक का संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ संबंध क्षेत्रीय सुरक्षा की गतिशीलता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

चीन-भारत और भारत-पाकिस्तान के बीच राजनीतिक संबंधों पर इतिहास का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। हालांकि, चीन-भारत के व्यापारिक संबंध लगातार विकसित होते रहे हैं, जो राजनीतिक मतभेदों और विवादों के बावजूद आर्थिक क्षेत्र में बाधा नहीं बने। यह केवल तब होता है जब कृत्रिम व्यापारिक अवरोध उत्पन्न किए जाते हैं, जैसा कि पाकिस्तान ने भारत के साथ किया है। तिब्बत चीन-भारत के विभाजन का मुख्य केंद्र है, जबकि चीन, भारत और पाकिस्तान की सीमाएँ प्राचीन रियासत जम्मू और कश्मीर में मिलती हैं। इतिहास के साथ समझौता करना और इसे एक बाधा न बनने देना, इस क्षेत्र में एक बेहतर भविष्य की योजना बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। पाकिस्तान के लिए असली समस्या भारत के साथ उसके संबंध नहीं, बल्कि उसका अपना भविष्य है क्या? यह उग्रवाद, आतंकवाद और सैन्यवाद में डूबा रहेगा, या एक स्थिर और उदार इस्लामी राज्य की ओर बढ़ेगा?

एशिया का भू-राजनीतिक परिदृश्य अगले कुछ दशकों में किस प्रकार विकसित होगा, यह पूर्वानुमान लगाना सरल नहीं है। फिर भी, यह स्पष्ट है कि चीन तेजी से अपनी स्थिति को मजबूत कर रहा है, जिससे अमेरिका की सुरक्षा के अंतर्निहित गारंटर के रूप में भूमिका अनजाने में बढ़ रही है। निकट भविष्य में, चीन और पाकिस्तान के बीच एक रणनीतिक गठजोड़ स्थापित होगा। हालांकि, चीन-भारत-पाकिस्तान त्रिकोण का एक स्थायी पहलू बना रहेगा, जिससे पाकिस्तान का भविष्य अनिश्चित बना हुआ है। कश्मीर, अपनी ओर से, एक गंभीर क्षेत्रीय विवाद बना रहेगा, जिसे तीनों विवादकर्ताओं द्वारा बेहतर तरीके से प्रबंधित किया जा सकता है। वास्तव में, उस विवाद को सुलझाने की कोशिश करना एक अपूरणीय रूप से टूटी हुई शादी को ठीक करने के समान है।

एशिया वर्तमान में कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है। इसे जटिल क्षेत्रीय मुद्दों, समुद्री विवादों और हानिकारक ऐतिहासिक धरोहरों से निपटना होगा, जो सभी महत्वपूर्ण पहलुओं को कमजोर कर देते हैं। अंतर्राज्यीय एशियाई संबंधों में बढ़ती प्रतिस्पर्धा, विशेष रूप से ऊर्जा और जल के दुर्लभ संसाधनों पर महत्वपूर्ण है। इसके अलावा एशियाई देशों की सैन्य क्षमताओं में वृद्धि, उग्र राष्ट्रवाद का उदय, धार्मिक अतिवाद, और बड़ी संख्या में गरीब लोगों की स्थिति भी चिंताजनक है। हालांकि, एशिया व्यापार, निवेश, प्रौद्योगिकी और पर्यटन के माध्यम से एक-दूसरे पर अधिक निर्भर होता जा रहा है। लेकिन जबकि एशिया आर्थिक रूप से एकजुट हो रहा है, राजनीतिक स्तर पर ऐसा नहीं हो रहा है। वास्तव में, राजनीति और अर्थशास्त्र के बीच की खाई और भी चौड़ी होती जा रही है, जिससे एशिया राजनीतिक रूप से और अधिक विभाजित होता जा रहा है।

एशिया में सुरक्षा ढांचे की वास्तविकता यह है कि न तो कोई ठोस सुरक्षा तंत्र मौजूद है और न ही क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए कोई स्पष्ट रूपरेखा। कुछ क्षेत्रीय परामर्श तंत्र अवश्य हैं, लेकिन उनकी प्रभावशीलता सीमित है। सुरक्षा के संदर्भ में मतभेद बने हुए हैं कि क्या वास्तुकला या समुदाय का विस्तार पूरे एशिया में होना चाहिए या इसे केवल एक अस्पष्ट क्षेत्रीय संरचना, जैसे कि पूर्व एशिया तक सीमित रखा जाना चाहिए। संयुक्त राज्य अमेरिका, भारत, जापान, वियतनाम और अन्य कई देश एशियाई महाद्वीप को एक समग्र इकाई के रूप में देखने की इच्छा रखते हैं। इसके विपरीत, चीन ने एक अलग 'पूर्व एशियाई' व्यवस्था की मांग की है।

एशिया और यूरोप की सुरक्षा के बीच एक प्रमुख भिन्नता यह है कि यह अत्यधिक रक्तरंजित है। 20वीं सदी के पहले भाग में हुए संघर्षों ने वर्तमान युद्धों को असंभव बना दिया है। यूरोप में, 20वीं सदी के दूसरे भाग में एशिया में युद्धों का समाधान नहीं हो पाया है, जो केवल कड़वी प्रतिद्वंद्विता को बढ़ावा देता है। 1950 से एशिया में कई अंतर्राज्यीय युद्ध लड़े जा चुके हैं, जिनमें कोरियाई युद्ध और तिब्बत का विलय शामिल है। ये युद्ध विवादों को सुलझाने या समाप्त करने के बजाय उन्हें और बढ़ाते रहे हैं। चीन, महत्वपूर्ण रूप से, सैन्य हस्तक्षेप में शामिल रहा, भले ही वह आंतरिक समस्याओं से जूझ रहा हो।

पाकिस्तान के अधिग्रहित कश्मीर में हजारों पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए) के सैनिक वर्तमान में निर्माण कार्य में संलग्न हैं। भारत की सीमा से सटे उत्तरी गिलगित-बाल्टिस्तान क्षेत्र में महत्वपूर्ण परियोजनाएँ चल रही हैं। वाशिंगटन स्थित क्षेत्रीय सुरक्षा विशेषज्ञ सेलिग हैरिसन ने जानकारी दी है कि गिलगित में पीएलए के 7,000 से 11,000 सैनिकों की तैनाती हो रही है। बाल्टिस्तान क्षेत्र, जो बाहरी दुनिया के लिए बंद है, में नए रेलमार्ग, उन्नत राजमार्ग, बाँध और गुप्त सुरंगों जैसी परियोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। यह स्थिति व्यापक चिंता का कारण बन रही है कि ये रणनीतिक सीमावर्ती क्षेत्र 'अभिभूत' हो सकते हैं, जैसे कि तिब्बत में चीनी प्रभाव के कारण।

इस प्रकार की गतिविधियाँ इस बात की पुष्टि करती हैं कि चीन, जो जम्मू और कश्मीर राज्य के एक हिस्से पर नियंत्रण रखता है, कश्मीर विवाद में एक महत्वपूर्ण तीसरे पक्ष के रूप में उभरता है। इसके अतिरिक्त, पाकिस्तानी क्षेत्र में चीनी सैनिकों की उपस्थिति की भी जानकारी प्राप्त हुई है, चाहे वे निर्माण बटालियनों के रूप में हों, यह दर्शाता है कि चीनी सैनिक भारतीय कश्मीर के दोनों ओर (पूर्व और पश्चिम) तैनात हैं। चीन-पाकिस्तान की सांठगांठ, पाकिस्तानी कश्मीर में बढ़ती चीनी उपस्थिति के साथ, वास्तव में भारत को युद्ध की स्थिति में दो मोर्चों वाले संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करती है।

यह इतिहास से स्पष्ट है कि पाकिस्तान के संबंधों के संदर्भ में चीन का दृष्टिकोण यह है कि पाकिस्तान भारत-चीन सीमा विवाद को एक विशेष दृष्टिकोण से देखता है। यह केवल पाकिस्तान-चीन मित्रता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह भी इस क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्विता और विवाद का परिणाम है, जिसने भारत और पाकिस्तान के बीच संबंधों को प्रभावित किया है। चीन और भारत के बीच लंबे समय से विवाद चल रहा है, जिसने अतीत में युद्धों को जन्म दिया है, जैसे कि हाल ही में हुई हिंसक झड़पें गलवान घाटी में मई-जून 2020 में। इसी प्रकार, पाकिस्तान और भारत के बीच भी अक्सर झड़पें होती रहती हैं, विशेषकर उन क्षेत्रों में जो पाकिस्तान और भारत के प्रशासित कश्मीर के बीच वास्तविक सीमा को दर्शाते हैं। भारत, चीन और पाकिस्तान के बीच के त्रिकोणीय संबंध क्षेत्रीय और वैश्विक स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इस रिश्ते का प्रबंधन एक आवश्यक कार्य है।

सामरिक त्रिकोण का वर्तमान संदर्भ :

भारत-चीन-पाकिस्तान संबंध एक रणनीतिक त्रिकोण का निर्माण करते हैं, जिसमें तीनों देश परमाणु शक्तियों से सम्पन्न हैं। भौगोलिक और रणनीतिक कारकों के मद्देनजर, इन तीन शक्तियों के लिए एक-दूसरे से पूर्ण अलगाव में सह-अस्तित्व संभव नहीं है। वे एक-दूसरे के साथ संवाद करते हैं, जो वर्तमान राजनीतिक वास्तविकता का एक हिस्सा है। इसलिए, तीनों सरकारों के लिए यह आवश्यक है कि वे अपने व्यवहार के निहितार्थ को समझें और त्रिकोण की अन्य स्थितियों पर विचार करें। इसका तात्पर्य है कि उन्हें एक मित्रवत, शांतिपूर्ण और सौहार्दपूर्ण पड़ोसी के रूप में कार्य करना चाहिए। यदि कोई दो शक्यिाँ तीसरे के खिलाफ एकजुट होती हैं, तो यह सभी पक्षों के लिए सबसे गंभीर परिणाम हो सकता है, जिससे दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन में अस्थिरता और पूरे क्षेत्र में असुरक्षा उत्पन्न हो सकती है। जब भारत-चीन सीमा विवाद की बात आती है, तो कुछ अंतर्राष्ट्रीय संबंध विशेषज्ञों का मानना है कि पाकिस्तान की स्थिति और भी बिगड़ सकती है।

भारतीय दृष्टिकोण से, चीन और पाकिस्तान के साथ दो मोर्चों पर युद्ध की संभावना को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता, विशेषकर जब चीन-भारत सीमा पर तनाव बढ़ता है। जनरल मनोज मुकुंद नरवणे, जो थल सेनाध्यक्ष हैं, ने मई 2020 में इस विषय पर अपनी चिंताओं को व्यक्त किया। उन्होंने चेतावनी दी कि युद्ध केवल सेना द्वारा नहीं लड़ा जाता, बल्कि इसमें अन्य राष्ट्रीय स्तंभ जैसे कि नौकरशाही और निर्वाचित अधिकारी भी शामिल होते हैं। इस समय, दो विरोधियों का सामना करना, विशेष रूप से जब भारत, चीन और पाकिस्तान सभी कोविड-19 महामारी से प्रभावित हैं। भारत के लिए एक गंभीर सुरक्षा चुनौती और विदेश नीति की कठिनाई उत्पन्न करेगा।

पाकिस्तान में इस समय एक चिंता का विषय यह है कि यदि भारतीय सेना को चीन-भारत सीमा पर किसी प्रकार का अपमान या पराजय का सामना करना पड़ा, तो भारत भविष्य में पाकिस्तान के साथ सीमा पर संघर्ष उत्पन्न कर सकता है। उदाहरण के लिए, पिछले वर्ष इस्लामाबाद को यह आशंका थी कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी लद्दाख में हुई असफलता के प्रतिकार में पाकिस्तान के खिलाफ अपनी प्रतिष्ठा को बचाने के लिए कोई योजना बना सकते हैं।

अविश्वास का माहौल दोनों पक्षों में व्याप्त है। गलवान घाटी में हुई झड़प के दौरान, भारतीय मीडिया ने यह आरोप लगाया था कि पाकिस्तान और चीन ने मिलकर एक बड़ी साजिश की थी। भारत ने पाकिस्तान के साथ मिलकर लगभग 20,000 सैनिकों को गिलगित-बाल्टिस्तान में तैनात करने की योजना बनाई थी, जो चीनी जनरलों के आदेश पर थी। हालांकि, पाकिस्तानी अधिकारियों का कहना है कि उनकी सेना की गतिविधियाँ क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए असामान्य नहीं थीं, बल्कि यह एक उचित प्रतिक्रिया थी। यह कदम संकट से निपटने के लिए एक विवेकपूर्ण निर्णय था, ताकि किसी अप्रत्याशित स्थिति का सामना किया जा सके।

क्षेत्रीय शांति और स्थिरता की आवश्यकता :

यह सत्य है कि पाकिस्तान ने अक्रामकता अपनाने में कोई रुचि नहीं दिखाई है, न ही उसने स्ाब पर झड़प के दौरान अवसरवादी नीति का सहारा लिया। ऐसा करना पाकिस्तान की अपनी क्षेत्रीय सुरक्षा को कमजोर करने के समान होता। पाकिस्तान में एक सामान्य भावना थी कि अपने प्रतिद्वंद्वी के सैन्य संघर्ष को देखने में उत्साह का माहौल था, विशेषकर चीन को रोकने के संदर्भ में। हालांकि, पाकिस्तान का दृष्टिकोण यह था कि चीन को अपनी लड़ाई खुद लड़ने दिया जाए, जबकि भारत के साथ युद्ध के लिए कश्मीरी नियंत्रण रेखा के साथ तापमान को कम करने के लिए कदम उठाए जाए। अंततः पाकिस्तान का उद्देश्य दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन को बनाए रखना है, जो कि एक कमजोर और अपमानित भारतीय पड़ोसी द्वारा पूरा नहीं किया जा सका।

पाकिस्तान को भारत-चीन सीमा विवाद का सामना जटिल और चुनौतीपूर्ण तरीकों से करना पड़ रहा है। कुछ दृष्टिकोण से, 2020 का भारत-चीन सीमा संघर्ष पाकिस्तानी हितों के लिए नकारात्मक साबित हुआ। इस संघर्ष ने वैश्विक समुदाय का ध्यान जम्मू-कश्मीर में भारत की विवादास्पद गतिविधियों से हटा दिया, जिन्हें पाकिस्तान और अन्य स्थानों पर अत्याचार के रूप में देखा जाता है। भारत द्वारा अनुच्छेद 370 को निरस्त करना, जो जम्मू और कश्मीर को विशेष दर्जा प्रदान करता था, एक ऐसा मुद्दा है जिस पर पाकिस्तान चाहता है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय ध्यान दे। हालांकि, जब भी भारत-चीन सीमा पर तनाव बढ़ता है, यह विषय कम महत्वपूर्ण हो जाता है। दूसरी

ओर, भारत-चीन संघर्ष ने पाकिस्तान को अप्रत्यक्ष रूप से लाभ पहुँचाया है, क्योंकि इससे चीन-पाकिस्तान सहयोग को मजबूती मिली है। जुलाई 2020 में चीन और पाकिस्तान ने 2.4 बिलियन डॉलर के जलविद्युत समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसमें यह परियोजना पाकिस्तान के प्रशासित कश्मीर में स्थापित की जाएगी। यह परियोजना सीपीईसी का एक हिस्सा है, और इसके 2026 में पूर्ण होने पर लगभग 3.3 बिलियन यूनिट पुनः प्रयोज्य ऊर्जा प्रदान करने की संभावना है। चूंकि यह परियोजना पाकिस्तान के प्रशासित कश्मीर (जिसे भारत द्वारा दावा किया गया है) में चल रही है, इसे पाकिस्तान की स्थिति को मजबूत करने वाला एक कूटनीतिक और रणनीतिक लाभ माना जा सकता है। पाकिस्तानी अधिकारी इस बात का खंडन करते हैं कि वे बिगड़ती सुरक्षा स्थिति का लाभ उठाकर आर्थिक लाभ प्राप्त करने का प्रयास कर रहे हैं।

निष्कर्ष :

इस निष्कर्ष पर पहुँचा जा सकता है कि पाकिस्तान की चीन और भारत के बीच तनाव प्रबंधन में गहरी रुचि है। कई ऐसे कारक हैं जो पाकिस्तान को चीन के प्रति समर्थन की दिशा में अग्रसर करते हैं, और इनकार नहीं किया जा सकता। पाकिस्तान न केवल चीन के साथ CPEC जैसे मेगाप्रोजेक्ट पर कार्यरत है, बल्कि यह बीजिंग के साथ रक्षा संबंधों को भी मजबूत कर रहा है, जो दोनों देशों के बीच एक दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी का हिस्सा है। हालांकि, यह ध्यान देने योग्य है कि पाकिस्तान ने गलवान घाटी संघर्ष के दौरान एक तटस्थ रुख बनाए रखने का प्रयास किया, और इसके बजाय संघर्ष को कम करने में अपनी ऊर्जा लगाई। इसका कारण स्पिलओवर है। रक्तपात और प्रतिद्वंद्विता का प्रभाव पड़ सकता है, जो केवल आर्थिक गतिविधियों और विकासात्मक कार्यक्रमों को नुकसान पहुँचाता है, बल्कि क्षेत्र की समग्र शांति प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है। भारत, चीन और पाकिस्तान की सरकारों को यह समझना आवश्यक है कि उनके कार्य और संवाद एक-दूसरे पर गहरा प्रभाव डालते हैं। वर्तमान में, विश्व एक ऐसी चुनौती का सामना कर रहा है जो सीमा विवाद से कहीं अधिक गंभीर है, अर्थात् कोविड-19 महामारी। इस संकट का सामना करने के लिए हिंसक संघर्ष के बजाय सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता है। दुर्भाग्यवश, भारत-चीन-पाकिस्तान त्रिकोण का भविष्य काफी अस्थिर प्रतीत हो रहा है। शांतिपूर्ण पड़ोसी संबंधों के निर्माण के लिए व्यापक राजनयिक प्रयासों की आवश्यकता होगी ताकि इस दृष्टिकोण को सफलतापूर्वक लागू किया जा सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

1. मुहम्मद अकबर नोटाजई, 'चीन-भारत के बीच लद्दाख में गतिरोध का पाकिस्तान पर क्या प्रभाव पड़ता है?' राजनयिक, 24 जून, 2020.
2. एलिसा आयर्स का लेख 'द चाइना-इंडिया सीमा विवाद क्या जानना है?' लद्दाख में हुई झड़पों में कम से कम 20 भारतीय सैनिकों की मृत्यु हुई। इस विषय पर विदेश संबंध परिषद द्वारा 18 जून, 2020 को प्रकाशित हुआ।
3. मोनिश टूरांगबम, 'चीन-भारत-पाकिस्तान त्रिकोण : उत्पत्ति, समकालीन धारणाएँ, और भविष्य', स्टिम्सन, 25 जून, 2020
4. सत्यब्रत सिन्हा, 'स्ट्रैटेजिक ट्राइएंगल : भारत-चीन-पाकिस्तान,' चाइना रिपोर्ट, 40, संख्या 2 (2004) : 221-25
5. हंस जे. फेडी, 'चीन, भारत और पाकिस्तान का रणनीतिक त्रिकोण - चीन-भारत संबंधों में पाकिस्तान का प्रभाव,' ग्लोबल अफेयर्स, संख्या 4-5 (2020) : 559-75।
6. माहम एस. गिलानी, 'भारत-चीन सीमा विवाद का पाकिस्तान और क्षेत्र पर प्रभाव,' सेंटर फॉर एयरोस्पेस एंड सिक्योरिटी स्टडीज, 15 जुलाई, 2020 ।
7. शालिनी चावला, 'भारत-चीन संघर्ष : पाकिस्तान के लिए क्या निहित है?' फाइनेंशियल एक्सप्रेस, 16 सितंबर, 2020 ।
8. अदनान आमिर, 'चीन-भारत टकराव के साथ पनबिजली समझौते से पाकिस्तान को लाभ,' निक्केई एशिया, 06 जुलाई, 2020।
9. आयशा सिद्दीका, 'पाकिस्तान भारत-चीन एलएसी संघर्ष पर चुप क्यों है?' द प्रिंट, 04 जुलाई, 2020 ।

❖❖❖